Roll No. .....
Signature of Invigilator .....

Paper Code
BA-212

पतंजलि विश्वविद्यालय

University of Patanjali

Reappear Examination August – 2021

B.A. (with Yoga Science), Semester : Second
Sanskrit ; Paper : Second

संस्कृत साहित्यं

Time: 3 Hours **Max. Marks: 75**

नोट : यह प्रश्नपत्र पचहत्तर (75) अंकों का है जो दो (02) खंडों क, तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड–क
(दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पांच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पंद्रह अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(3×15=45)**

1. मुण्डकोपनिषद् के अनुसार पराविद्या और अपराविद्या की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. सिंहजम्बुकगुहा- कथा का वर्णन विस्तार से लिखें।
3. सग्विणी एवं अनुष्टुप छन्द के लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।
4. नीतिशतकम् के अनुसार सज्जन और दुर्जन के लक्षणों पर प्रकाश डालिए।
5. 'विवेकानन्दचरितामृतम्' के अनुसार विवेकानन्द के गुणों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ख
(लघु–उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पांच अंक निर्धारित हैं। किन्हीं **छः** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(6×5=30)**

1. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।
   ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः।।
2. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
   अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्।।
3. यच्च वेदेषु शास्त्रेषु न दृष्टं न च संश्रुतम्।
   तत्सर्वं वेत्ति लोकोऽयं यत्स्याद् ब्रह्माण्डमध्यगम्।।
4. सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम्।
   आपत्सु च महाशैलशिलासङ्घातककेशम्।।
5. लोके बोधात्मकं ज्योतिः सदैवोदेति पूर्वतः।

तथ्यमिदं स्वतः सिद्धं स्वीकृतं सर्वमानवैः।।

6. निम्नलिखित गद्य का हिन्दी भाषा में अनुवाद कीजिए।

   तस्या जाह्नव्या स्नात्वोपस्प्रष्टुमारब्धस्य करतले श्येनमुख्यात् परिभ्रष्टा मूषिका पतिता। तां दृष्ट्वा न्यग्रोधपत्रेऽवस्थाप्य पुनः स्नात्वोपस्पृश्य च प्रायश्चित्तदिक्रियां कृत्वा मूषिका तां स्वतपो बलेन कन्यकां कृत्वा समादाय स्वाश्रमम् आनिनाय। अनपत्यां च जायामाह- भद्रे! गृह्यतामियं तव दुहितोत्पन्ना, प्रयत्नेन संवर्द्धनीया इति। ततस्तया संवर्द्धितालालिता पालिताचयावद् द्वादशवर्ष सञ्जाता।।

7. पञ्चतन्त्रों में काकोलूकीयम् तन्त्र का संक्षेप वर्णन करें।

8. मुण्डकोपनिषद् के भौतिक विज्ञान एवं अध्यात्मविज्ञान का संक्षेप में वर्णन करें।

----------x----------